LITERARY COMPETITION

THEME - AZADI KA AMRIT MAHOTSAV

Faculty of Architecture & Planning

AUGUST 14, 2022

Faculty of Architecture & Planning

'जय भारती'

जय गान करता,
पवन निश दिन,
गगन करता आरती,
जय भारती, जय भारती.....

दे रहा, परिचय हिमालय,
राष्ट्र के अभिमान का।
गुणगान करते देवता,
जिस देश की महानता।
हे माँ ये सागर तट की लहरें,
चरण तेरे पखारती।
जय भारती, जय भारती.....

रंग कुसुमल और केसर,
कर रहा श्रृंगार है।
वीरों की, ये भूमि जिस की,
महिमा अपरम्पार है।
तेरी अमर गाथा रही,
विश्वास मन मे उतारती।
जय भारती, जय भारती.....

त्याग मर्यादा सिखाती,
भूमि ये श्रीराम की।
कृष्ण ने, संसार को दी,
अमर गीता ज्ञान की।
ऋषियों की, पावन भूमि है,
यह देवों के, अवतार की।
जय भारती जय भारती .....

अब तिरंगा हांथ में,
और साथ में तलवार है
है कसम गंगा की जो ,
इस सभयता का आधार है।
हो विजय आशीष दे,
रणभूमि मुझको पुकारती
जय भारती, जय भारती.....

-**गिरीश पाण्डेय**
सहायक प्रवक्ता, फैकेल्टी ऑफ आर्किटैक्चर

Faculty of Architecture & Planning

Azadi ka Amrit Mahotsav

India's independence represented for its people the start of an epoch that was imbued with a new vision. The Indian independence movement was a series of historic events with the ultimate aim of ending the British rule in India. It was a tale of bravery about the heroes of our country. Independence is a flexible idea, both a moment in time and a project, a carrier of hopes and ideals of social justice and freedom, but also of disappointments and frustrated futures. Independence Day is an important day in the life of every Indian citizen. 15th august was one of the most memorable days in Indian history. Year after year, it reminds us of our great freedom fighters who sacrificed and struggled their lives in order to free our Motherland from British rule. It reminds us of the great paragons, which were the foundation of the dream of a free India, envisioned and realized by the founding fathers. It also reminds us that our forefathers have done their share of duty and now it lies in our hands how we can shape and form the future of our country. They have played their part and have played it well. The country now looks up to us as to how we perform our part. A wind of patriotism and National integration blows across the country on this day. Independence Day generates a feeling of patriotism among people. It unites the people and makes them feel that we are one nation with so many different languages, religions and cultural values. Unity in diversity is the main essence and strength of India. We feel proud to be part of the largest democratic country in the world, where the power is in the hands of the common man. Those who witnessed the massacre during the British rule and the difficulties they faced during that period are more humble. They have seen the real hardships of life and value the good times. This feeling of gratitude and a humble attitude is missing in the younger generation. Independence Day celebrations are a way to explain people about real-world problems and to be grateful for what they have been given.15th August is celebrated as a national festival with flag hoisting, parades and cultural events. Schools, colleges, offices, society complexes, government and private organizations conduct functions and celebrate this day with great enthusiasm. The country displays the same unity in celebrating Independence Day as it had displayed in the fight for independence. People from different walks of life and from various religious and cultural background celebrate with unparalleled nationalism and patriotism. On this day, the Prime Minister of India hoists the flag at the Red Fort and addresses the nation by a speech. Thus, Independence Day is a significant festival in India. It is among the very few festivals that are celebrated by every religious community of India with the same joy and enthusiasm. It is a day of immense pride for the people of our country.

GHAZAL GUJRAL,

B.ARCH. , 3RD YR FOAP

Faculty of Architecture & Planning

१- सर बांध कफ़न निर्भीकों की दौड़ हुई,
और घर हो या सरहद तक,
देश के खातिर होड़ हुई,
वतन रख सर आंखों पर,
पुरजोरों से वंदे मातरम की हूंक उठी।
कुछ गाये जाते हैं कुछ अनजानों की बोल हुई,
जब राख हुए हिन्द के खातिर,
जाने भी अनमोल मिटी।
चेतक दौड़ा था,
कभी पिस्तोलों की मोल हुई।
रक्तरंजित हुई धरा,
तब यह जहां शमशीर हुई।
२- ओज शौर्य साहस का माथे पर कर तिलक,
सीने में दिल देश के लिए धड़काते हैं,
घर में मां के सीने से लगे रहे सदा हम,
इसलिए औरों से सीने पर गोलियां खा जाते हैं।
राखी ,होली, ईद हो या हर घर दिवाली हो,
उन्हें खबर कहां तीज क्या त्यौहार की,
जो उत्सव वतन के खातिर मनाते हैं।
गुड़िया ने जब तिरंगे के लिए ज़िद किया,
पिता कैसे पूरी न करें ज़िद लाडली की,
अगले ही दिन ओढ़ लिया तिरंगे को,
फिर दृश्य देख रो पड़ीं मां भारती भी।
कर रही सत सत नमन उसे जिसने जाया है,
आ पड़ी जब वतन की आन पर,
उसने बस भारती को मां बताया है।

-सुरभि मिश्रा
I T M , Lucknow

Faculty of Architecture & Planning

1. तीन रंगो को साधे ये ध्वज हमारी शान है।
भारत माँ के कोख से जन्मा ये देश हिन्दुस्तान है।।
अनेक धर्मो , अनेक जातियों का पालनहार है।
जो हर संस्कृतियों , हर रंगो के व्यक्तियों क़ो अपना ले।।
यही तोः मेरा देश हिन्दुस्तान है।
-रोशन कुमार

फैकेल्टी ऑफ आर्किटैक्चर

भोर सवेरे उठकर देखा,

कहीं आसमान में तिरंगा लहराता,

कहीं स्कूलों में लड्डू बँट रहे थे।

कोई नेता सफ़ेद कुर्ते में,

बड़ा सा झाड़ू लेकर फ़ोटो खिंचवाता ।

कहीं सफ़ाई और स्वच्छता पर

माइक पर कोई सफ़ाई का पाठ पढ़ाता ।।

सफ़ाया करना है तो संकीर्ण मानसिकता करो,

महिलाओं का सम्मान करो,

और अपने मन का मैल साफ़ करो

गलियों और नालों से पहले,

मन-मस्तिष्क को स्वच्छ बनाओ, दहेज, जातिवाद,

भ्रष्टाचार जैसी कुरीतियाँ मिटाओ देश को स्वस्थ बनाओ।

कब तक हाथों में झाड़ू लेकर, छपते रहोगे अख़बारों में

ऐसे पोस्टर कैलेण्डर फ़ोटो, बहुतेरे बिकते हैं बाज़ारों में ।।

चलो स्वच्छ निर्मल मन से अब, सबका हम सत्कार करें।

स्वस्थ शरीर निरोगी मन लेकर, बापू - शास्त्री का सपना साकार करें ।।

चल रही है आज वो खबर देखिये,

नफ़रतों का यहाँ पर असर देखिये |

तोपों के सामने सीना तान हैं खड़े,

इंक़लाबियों का ऐसा जिगर देखिये |

अमन, फैकेल्टी ऑफ आर्किटैक्चर

Faculty of Architecture & Planning

कोई मस्जिद तो कोई मंदिर बनाता है,

कोई गलियां तो कोई डगर बनाता है।

हमारा ओहदा एक वास्तुकार का है,

जो किसी के सपनो का घर बनाता है ।।

घर तो चार दीवारों से भी बनता है,

पर तजुर्बा हमारा इसे सुंदर बनाता है।

बना देता है झुंड ऊंची इमारतों का,

कभी कभी ये पूरा शहर बनाता है ।।

हमारा ओहदा एक वास्तुकार का है,

जो किसी के सपनो का घर बनाता है।

मिशालें बनाना तो रगों में है हमारी

ये खड़ी इमारतों से साफ नजर आता है,

आसमान तक पहुंचाया है हमने हुनर अपना ,

कि नजर उठाकर भी नही नजर आता है (burj खलीफा)।।

हमारा ओहदा एक वास्तुकार का है,

जो किसी के सपनो का घर बनाता है।

फिर हो सुर्ख हवाएं या समंदर ही क्यों न,

मंजिल पाने तक ये वही ठहर जाता है ।

चुनौतियां घबराती हैं इन नाजुक हाथों से,

न जाने ये कब क्या करिश्मा कर जाता है।

हमारा ओहदा एक वास्तुकार का है,

जो किसी के सपनो का घर बनाता है ।

~ आनन्द मोहन मिश्रा

बी-आर्क प्रथम वर्ष ।

Faculty of Architecture & Planning

गुरु शिष्य की कहानी

राम कृष्ण परमहंस को कोई जान ना पाता अगर उनकी जिन्दगी में विवेकानन्द जैसा शिष्य ना अता | कोई जानना पाता अकी महानता को अगर शिकागों मे दिये भाषण में वो अपने विचार न बताता जिसे आज तक अपने गुरु को विदेशियों के दिल में कराया राज, ऐसा एक भी शिष्य नहीं होता क्यो आज.

आज तो शिष्य नम्बर और टॉप होने मे इतना खो गया है मानो खुद से ही अजनबी हो गया है।

एक बार फिर से वो जमाना लो ओओ.

मुझे विवेकानन्द से मिलने की चाहत है मेरे लिए ही सही तुम विवेकानन्द बन जाओ।

जिंदगी की परिभाषा

ना है दोस्त कोई ना दुश्मन है कोई... ये सब जिंदगी के वक्त के इशारे.. कल वो भी गैर हो जायेंगे जो है आज तुम्हारे.. ये कल युग है यहां लोग मेरे मुंह पे मेरे तुम्हारे मुंह पे तुम्हारे.. ना है दोस्त कोई ना दुश्मन है कोई ये सब जिंदगी के वक्त के इ शारे...

नई उडान

छोटे से पक्षी को पंख नये मिले, जीवन के चित्र को रंग नये मिले लेकर इन पंखों को उडान भरूंगी मै अपना एक जहा बसाऊंगी अपनी एक अलग पहचान बनाऊगी ,एक दिन ऐसा आयेगा जब मेरा सूरज छायेगा आकाश पर मेरा नाम होगा आगे बढ़ना ही मेरा काम होगा, छुऊगी नभ के सितारों को, जीतूंगी विश्व सारे को । मानव कल्याण के लिए जीयूंगी वसुंधरा की नित जय कहूंगी यदि मुझे साकार रूप मिला और मेरा अस्तित्व खिला तो अपना ही नहीं सबका विकास करके रहगी ,एक दिन इन इरादो को सच करके रहूंगी।

- **प्रियंका रस्तोगी**

सहायक प्रवक्ता, फैकेल्टी ऑफ आर्किटैक्चर

Faculty of Architecture & Planning

BIRD'S EYE VIEW

A bird soaring above the highest of skies,
Scrutinizing the beauty below;
Wind tickling it’s crown ruffling the feathers,
Light reflecting enigmatically like in a willow.
Soon a grey cloud ventured above,
All light evanesced;
Air stopped breathing,
The world felt to have thawed as the reaper descended.
The bird whistled in a tune of alarm,
Warning those below her losing their calm;
It felt a strange surge of worry,
As visibility became all the more blurry.
A crash so strong,
It shook all lands.
A deafening sound,
And then nihility!
“I wish it was lightning,
As it would not have struck twice;
But alas it is not He who does this,
But humans with hearts of ice."
It prayed as the souls left for heaven,
As children lay so very still;
As rubble became their tombstone and homes equalled graves,
A substantial price, which should not have been paid.
It looked around one last time,
Hoping to see a movement in sight;
But all it saw was a hand painted scarlet,
Martyred below the highest of skies.

- **Khadeeja Arshad**
  FOAP

Faculty of Architecture & Planning

FRIENDSHIP.....

Guys, I am back with a really cool thing which I think everybody should read and enjoy because it's a lesson which can really help you a lot. People come into your life for a reason, a season or a lifetime. When you know which one it is, you will know what to do for that person. When someone is in your life for a REASON, it is usually to meet a need you have expressed. They have come to assist you through a difficulty, to provide you with guidance and support, to aid you physically, emotionally or spiritually. They may seem like a godsend and they are. They are there for the reason you need them to be. Then, without any wrongdoing on your part or at an inconvenient time, this person will say or do something to bring the relationship to an end. Sometimes they die. Sometimes they walk away. Sometimes they act up and force you to take a stand. What we must realize is that our need has been met, our desire fulfilled, and their work is done. The prayer you sent up has been answered and now it is time to move on. Some people come into your life for a SEASON, because your turn has come to share, grow or learn. They bring you an experience of peace or make you laugh. They may teach you something you have never done. They usually give you an unbelievable amount of joy. Believe it, it is real. But only for a season!! LIFETIME relationships teach you lifetime lessons, things you must build upon in order to have a solid emotional foundation. Your job is to accept the lesson, love the person and put what you have learned to use in all other relationships and areas of your life. It is said that love is blind but friendship is clairvoyant. A loving relationship is one in which the loved one is free to be himself – to laugh together, but never at each other; to cry together, but never because of each other; to love life, to love themselves, to love being loved. Such a relationship is based upon freedom and can never grow in a jealous heart. Affection is always greater than perfection!! THANK YOU for being a part of my life, whether you were a reason, a season or a lifetime!!!!

-Tabish Abdulla
Asistant Professor,
Faculty Of Architecture

Faculty of Architecture & Planning

Hope

Remember when I was young
And there was nothing to see through
But now I feel like am see through
Remember when I was wrong
Although I can get it right now
But now I feel like there is nothing to hold on I couldn't save you
It's the darkest truth
All my hope crumbled into pieces
Now it's my truth
Truth for my false being
Coz I don't feel like a living being anymore Remember when I was young
Everything was quiet inside me
Remember when I was wrong Everything inside me is shouting now
But no one can hear it anymore
Except me, Except me, Except me
And I couldn't get it out of my system
So I talk to it now

I don't need hope anymore
I don't myself anymore
Now watch me die as make a cut through
my hand
Now watch me fly as I get rid of this hope.

-Suyash Yadav

Faculty of Architecture & Planning

||विदाई||

जा बेटी तू मत अधीर हो, यह भी नियम निभाना है|
हर कन्या को एक न एक दिन, देश पराये जाना है||
रोरो कर माँ सोचेगी, मन में विधि की यह कैसी लीला है|
जिस बेटी को मेने पाला-पोषा, जा रही छोड़ घर मेरा है||
पर जग का दस्तूर अनोखा, जिसे निभाना पड़ता है|
जीवन की अनजान डगर पर कदम बढ़ाना पड़ता है||
माँ की ममता प्यार पिता का सभी वहां मिल जाएगा|
चाची-चाची, भैया-भाभी का दुलार वहां मिल जाएगा||
हम सबने अपनी बेटी को हर समय यही सिखलाया है|
सास-ससुर के घर में ही कन्या ने सुख पाया है||

-Chinmay

B. Arch (1st Year)

Faculty of Architecture & Planning

डर लगता है मुझे बड़ा होने में
एक जिम्मेदारी लेने में और इस बचपन को खोने में
पता नहीं चला जिंदगी के ये 18 साल कैसे बीत गए
इन 18 सालो में हम सौ जंग कैसे जीत गए
फिर याद आया में जंगो को जीतने में मेरे मम्मी पापा का साथ है
जब कमजोर पडे हम तब सर पर मैंने पाया उनका हाथ है
पर अब डर लगता है मुझे मां का आंचल छोरने में
डर लगता है खुले आसमान की चादर ओडने में
डर लगता है मुझे आगे की दुनिया में कदम रखने में
इस नकली समाज से मिलने के लिए अपनी असली पहचान ढकने में
आगे हमसे सब कैसा होगा हम यही सोचते हैं
यही ख्याल आज कल दिन रात मेरे सर को नोछता है
मैंने सुना है उमर के इस पड़व पर गुस्सा बहुत आता है
पढाई को छोड मन हर तरफ जाता है
यह बात तो लाख रुपे की कही है
कल क्या होगा कुछ तय नहीं है
पर कल की किसको पड़ी है
जब आज हमारे हाथों में हमारी मर्जी की छडी है
सब कुछ आज कल मनका होता है
और ना हो तो मन गुस्सा बहुत होता है
पर मैं असली में ऐसी नही
ये तो कमबख्त इस उमर का प्रभाव है
जिसमे मन एक कटी पतंग और बिना चप्पू की नाव है
मैं माँ की अच्छी बेटी बन्ना चाहती हूं पर आज कल साथ नही देती मेरी जुबान
अब डर लगता है क्या मैं डूबूँ दुंगी अपने पिता का कमाया हुआ नाम
इस बात की मुझे निराशा है कि सबको मुझ से आशा है
डर लगता है की क्या हम उनके सपने पूरा कर पाएंगे
या इस डर में मेरे साथ उनके सपने भी मर जाएंगे
इसी लिए डर लगता है मुझे बड़ा होने में
एक जिम्मेदारी लेने में और इस बचपन को खोने में।

- **Jahnavi Jai Prakash**
B. Arch (1st Year)

Faculty of Architecture & Planning

सुना तो हमने भी था की लखनऊ का कुछ अलग ही लहजा होता है

हर सेहर से मुख्तालिफ इसका अपना ही एक सवेरा होता है

शर्मा की चाय से शुरुआत होती है

और तस्वीरों से भी सुहानी रात होती है

तुम कह ही नहीं सकते तुम्हें इल्म नहीं हमारे सेहर का क्योंकि कीताबों मै भी इसकी मुसल्सल बात होती है

किस्से नवाबों के ही नहीं उनकी कोठियों के भी मशहूर हैं तर्ज़-ए-तामीर मैं भी इसके कई नमूने मौजूद हे

इसकी इमारतों मैं हाज़िर इसके इतिहास के सबूत हे

दिवारों मैं लिपटी मुगलों से अंग्रेज़ों तक की निशानी हे

गलियों से लेके इमारतों तक की एक कहानी है यूं ही नहीं ये इस राज्य की राजधानी है

अमीनाबाद के झुमको की खनखनाहट चौक की गलियों तक सुनाई देती है, जगह-जगह यहाँ चिकनकारी की बिकरी होती है

पक्कानों मै तो इसका कोई मुकाबला ही नहीं

बिरयानी हो या कबाब यहां सब की एक खास दुकान होती हैं नाशते मै दही जलेबी से रात के टुंडे कबाबी तक का इंतजाम है आप कहिए तो जनाब आपको किस चीज कि तलाश है

यहाँ मुद्दत हर तलाश पूरी होती है

क्या लिखूं मैं उस सेहर पर जिसकी शायरी ही नहीं शायर भी बेहद मशहूर हैं

कविताओं की जनाब यही से तो शुरुआत होती है।

-अलंकृता

बी0 आर्क0 चतुर्थ वर्ष

Faculty of Architecture & Planning

FREEDOM

Abuses and whips and Shackles and chains
Could never change the direction of the blood flowing in my veins
And every moment, their desired volume of Freedom my lungs inhale
You show me every shade of your truth, but my mind is still Free to contemplate
You see, in the construction of human body Freedom is the base
We were planned and designed by The Divinity this way
So how come a mortal would try to capture my thoughts in a confined space
You couldn't understand that respect is earned or you'd be looked upon in disdain.
Freedom doesn't lie in pities
Or an hierarchical pride
It's instilled in my body
Not reserved only for the ones with might
It is carved in the skin of
Every form of life
It's is not an entitlement
"Swaraj is my Birthright!"

-Aakriti Srivastava
FOAP, IIIrd year

Faculty of Architecture & Planning

एक सितारा

वो एक सितारा जगता था जब हम सारे सो जाते थे
वो एक सितारा हँसता था जब हम सारे रो जाते थे
वो एक सितारा अपने आंसू आँखों में ही रखता था
वो एक सितारा घर की किस्मत मेहनत से ही लिखता था
वो एक सितारा रोज़ शामको खुशियाँ लेकर आता था
वो एक सितारा सारे दुख सीने में ही दफनाता था
वो एक सितारा अँधियारे में आज अकेला सोया है
वो एक सितारा तारा बनकर आसमान में खोया है
वो एक सितारा हर मुश्किल का हल खुद ही बन जाता था
वो एक सितारा भूँख मिटाकर खुद भूँखा रह जाता था
वो एक सितारा तकलीफों को बतलाने से डरता था
वो एक सितारा रोज़ टूटकर वादे पूरे करता था
वो एक सितारा दिन भर जल हर रात उजाला देता था
वो एक सितारा तूफानों में हमें सहारा देता था
वो एक सितारा अँधियारे में आज अकेला सोया है
वो एक सितारा तारा बनकर आसमान में खोया है

-Urvashi Sindhi
First year, FOAP

Faculty of Architecture & Planning

मोहब्बत-ए-कश्मीर की वादियों में

जब फरिश्तों से एहतलब होगा

तो पैगाम-ए-हिन्द पे कुर्बान होने का फरमान होगा

जब नमाज़-ए-जनाज़े में सजदों का एहतराम होगा

तो तिरंगें में लिपटा एक कफन होगा

जिसपे खुदा को भी गुरुर होगा

खैर नज़ाक़त भी उस खुदा की देखो

मुझे उस खुदा के दिल पे हैरत है

की उस मा की तो दुनिया उजड़ गयी

जिसके लाल की पेशानी पे लिपटा तिरंगा लाल रंग है

की उस दरक के सितारे ने इस जहां से यूँ मुह मोड़ लिया

की ये शायद तर्क ए तालुक की पहली दलील थी

की हमने ही चाँद को सितारोँ में यूं गिन लिया

कि बड़ी बेबसी में सूरज से चाँद करता हूँ

कि माँ मैं तुझे हर रोज़ याद करता हूँ

ये हिंदी देश हमारा है...
जिसको भारत ने सवारा है...
क्या हिंदी की उठती धारा को...
हम सब ने उभारा है....
हर गुलशन को प्यारी है ये...
हर गुलशन को न्यारी है...
ये भारत मां की वाड़ी है...
जो हर जवान को प्यारी है...

-सौरभ कुमार सिंह
बी0 आर्क0, तृतीय वर्ष
फैकेल्टी ऑफ आर्किटैक्चर

Faculty of Architecture & Planning

दिन के उजालों में जिन्हें दिखते है अंधेरे,
उनकी उम्मीद की किरण बनना।
धूप में बादल न बन सको तो,
पेड़ का साया बनना।
मदद न कर सको उनकी,
तो सहारा जरूर बनना।
क्योंकि खुदा कुछ इस तरह खेल रचाएगा,
आज वक्त उसका बुरा है तो कल तुम्हारा भी आएगा।

-Abhinav Bhardwaj

फैकेल्टी ऑफ आर्किटैक्चर

Faculty of Architecture & Planning

आज़ादी

हर साल खुशी से हम अब तो
आजादी का दिन मनाते हैं,
देश के वीर जवानो की
तस्वीरो पर हर चढाते हैं
वीरों की दी आजादी की,
सौगत के हम गुन गाते हैं,
यहां कदम- कदम पे बेड़ी थी,
अब सुकून से बढ़ हम पाते हैं
हर साल खुशी से हम यहां,
आजादी का दिन मनाते हैं।
ये देश है वीर जवानो का
यह वीरो की है शान बड़ी
ये देश है भारत कहलाता
जहाँ आजादी की जंग लड़ी
कोई लड़ा गोली- हाथियारों से
कोई लड़ा था तीर-कटारो से
हमने जीती आजादी है अहिंसा के भी जारो से,
क्या देश की मिट्टी की क़ीमत
तुम क्या जानोगे अंग्रेज़ो,
यहां खून बहा कर वीरों ने
तुमसे है सालो जंग लड़ी
यह हिंदू मुस्लिम कोई नहीं
हर रग में खून बहता है
तुम लाख लड़ा लो हमें मगर इस दिल में तिरंगा रहता है.....

- **अदीबा महबूब**
  फैकेल्टी ऑफ आर्किटैक्चर
  बी.चौथा वर्ष

Faculty of Architecture & Planning